© 2017 IJSRSET | Volume 3 | Issue 8 | Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099
Themed Section : Engineering and Technology

अध्यापक शिक्षकों का वृत्तिक विकास एवं शिक्षण के प्रति जबाब देही का अध्ययन

Dheerendra Kumar Singh

यूजीसी नेट–जेआरएफ (शिक्षाशास्त्र),
शोध छात्र, डॉ0 राम मनोहर लोहिया अवध विश्व विद्यालय फैजाबाद

अध्यापक शिक्षा से अभिप्राय, अध्यापकों को प्रशिक्षण व्यवस्था से है, जो एक सक्षम, आत्मनिर्भर अनुशासित, चरित्रवान, आदि गुणों से युक्त विद्यार्थियों के लिए आवश्यक है, उनका उच्चकोटि की शिक्षाव्यवस्था जो न केवल पाठ्यक्रम से पूरी की जा सकती है, बल्कि उसके लिए एक सक्षम अध्यापक की आवश्यकता होती है। इसी आवश्यकता की पूर्ति हेतु अध्यापकों को विशेष प्रशिक्षण दिया जाता है, जिससे छात्रों का सर्वांगीण विकास किया जा सके, एवं समाज में अध्यापक की निर्णायक भूमिका होती है, शिक्षा की गुणवक्ता और राष्ट्रीय विकास में शिक्षा के योगदान के लिए उत्तरदायी कारकों में से निःसन्देह सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है, उसके व्यक्तित्व गुणों और चरित्र शैक्षिक योग्यताओं एवं व्यावसायिक अर्हताओं पर अन्ततः शिक्षा सम्बन्धी सभी प्रयत्नों की सफलता निर्भर है।

डा0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन (1948–49) ने लिखा है कि ''समाज में अध्यापक का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है, वह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को बौद्धिक परम्पराएं और तकनीकी कौशल पहुँचाने का केन्द्र है, एवं सभ्यता के प्रकाश को प्रज्जवलित रखने में सहायता प्रदान करता है, इसीलिए किसी भी राष्ट्र का हित उस राष्ट्र के अध्यापक के हित पर निर्भर करता है।''

सेवाकालिन प्रशिक्षण की आवश्यकता के महत्त्व को ध्यान में रखते हुए **बुच (1968)** ने स्वीकार किया कि ''सेवाकालीन कार्यक्रम के अन्तर्गत वे समस्त क्रियाकलाप समाहित किये जा सकते है, जिनकी सहायता से अध्यापक/अध्यापिकाएं अपनी उद्यमगत योग्यता में वृद्धि सेवारत अवस्था में कर सकते हैं।'' अतः अध्यापक शिक्षकों की वृत्तिक विकास हेतु शिक्षाशास्त्रीय विषय ज्ञान तथा कौशल शिक्षा की आवश्यकता से सम्बन्धित विभिन्न कौशलों में दक्ष बनाया जाय, जिससे अध्यापक शिक्षक अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में योगदान दे सकें।

1. सम्बन्धित हुए अध्ययन–

बुच एवं अन्य (1961) ने शिक्षण प्रभावशीलता की मूल्यांकन विधि पर अध्ययन किया प्रशिक्षण प्रभावशीलता मापने के उपाय या विधियों को इस प्रकार स्पष्ट किया–

1. सेवारत प्रशिक्षण
2. सहयोगियों द्वारा मूल्यांकन
3. छात्रों द्वारा प्राप्त अंक

4. छात्रों द्वारा मूल्यांकन
5. परीक्षण से प्राप्त अंक
6. शिक्षण अभ्यास ग्रेड
7. उपर्युक्त में से कुछ के संयुक्त परीक्षण से

राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद की स्थाई समिति (1975–76) ने सेवारत शिक्षा पर कम से कम प्रत्येक पाँच वर्ष से एक महीने के लिए विद्यालयीय शिक्षक व शिक्षक प्रशिक्षकों को सेवारत प्रशिक्षण प्राप्त करना जरुरी होना चाहिए सेवारत शिक्षा मुख्य रुप से पत्राचार पाठ्यक्रमों के द्वारा संचालित की जानी चाहिए।

बेनेकेनाल (1996) ने कर्नाटक के महाविद्यालयी अध्यापकों के सेवाकालीन शिक्षा की आवश्यकता पर शोध कार्य किया जिसका उद्देश्य वर्तमान के साथ–साथ भविष्य में अध्यापकों के लिए प्रशिक्षण आवश्यकता क्षेत्र को ज्ञात करना था अध्यापन के परिणामस्वरूप निष्कर्ष में पाया गया कि–

- व्यवसाय की उन्नति
- मूल्यांकन प्रविधियों में प्रवीणता
- शिक्षण अधिगम प्रक्रिया की समस्याओं के समाधान हेतु
- भविष्य के महाविद्यालयी अधिगमकर्ताओं के ज्ञान हेतु
- आधुनिक शैक्षिक तकनीकी का ज्ञान हेतु
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति के क्रियान्वयन में रुचि उत्पन्न करने हेतु
- राष्ट्रीय एकता के पोषक वातावरण के निमार्ण हेतु
- शिक्षक शिक्षार्थी सम्बन्धों में खुलापन लाने के कौशल में प्रवीणता हेतु
- विद्यार्थियों में सृजनात्मकता का विकास करने वाले अधिगम अनुभव के आयोजन हेतु अध्यापकों द्वारा प्रशिक्षण की आवश्यकता व्यक्त किया गया

अध्यापक शिक्षा पर जस्टिश वर्मा (2012) आयोग ने निम्न बिन्दुओं पर जोर दिया–

(1) अध्यापकों को तत्कालीन परिप्रेक्ष्यों का ज्ञान होना चाहिए
(2) सेवारत प्रशिक्षण द्वारा शिक्षण कौशल का गुण होना चाहिए
(3) प्रत्येक समय नवीन शिक्षण कौशलों का विकास
(4) छात्रों को समझना व उनका विश्लेषण करने की क्षमता
(5) अध्यापकों को अपने क्षेत्र में नये नूतन कार्यक्रमों का ज्ञान होना
(6) तत्कालीन नवीन ज्ञान होना
(7) तार्किक ज्ञान होना
(8) वृत्तिगत विकास हेतु वर्कशाप सेमीनार कान्फ्रेस में भाग लेना
(9) तत्कालीन क्वाल्टी टीचर ट्रेनिंग पाठ्यक्रम का नियोजन व सामग्री इत्यादि का ज्ञान होना
(10) 'वेलक्वाल्टी फार टीचर' बनने की दक्षता रखना

(11) समय–समय पर ट्रेनिंग का एसेसमेन्ट करना

(12) डाइट तथा बी0आर0सी0, जैसे संस्थानों को अच्छे बनाये जाने व उचित संसाधनों का विकास करना

(13) सेवाकालीन शिक्षण में नीतिगत शिक्षा का ज्ञान होना जैसे–

- इम्प्लीमेशन होना
- अपडेट डेटा करते रहना
- समय–समय एन0सी0टी0ई0 एवं एन0सी0ई0आर0टी0 के नियम निर्देशों को समझते रहना
- आई0सी0टी0 का ज्ञान होना
- समय–समय ट्रेनिंग करते रहना

(14) ट्रेनिंग दो तरह की होनी चाहिए

- कोर फैकल्टी प्रशिक्षण–जो ट्रेनिंग फूल टाईम देना
- गेस्ट फैकल्टी ट्रेनिंग–ऐसी ट्रेनिंग जो समय–समय पर कुछ दिनों के लिए प्रशिक्षण दिया जाना

(15) सेवाकालीन प्रशिक्षण में विभिन्न प्रकार के शैक्षिक प्रोजेक्टरों एडमिनिस्ट्रीव सजेशन इत्यादि देना

नई शिक्षा नीति समिति (2017)–ने अध्यायक शिक्षा पर निम्न सुझाव दिये है–

- शिक्षण कौशल का ज्ञान होना
- वृत्तिक विकास हेतु समझ का ज्ञान होना
- अध्यापक शिक्षा में शैक्षिक तकनीक के महत्व का ज्ञान होना
- अध्यापक शिक्षा में गुणात्मक विकास हेतु राज्य, जिला व ब्लाक स्तर पर समझ का ज्ञान
- अध्यापकों को समय–समय पर मूल्यांकन परीक्षण हेतु समझ रखना
- संस्थाओं में गुणात्मक अध्यापकों को वरीयता या महत्व देने का ज्ञान
- शिक्षण कार्यों में आई0सी0टी0 मॉडल का अत्यधिक प्रयोग करने पर जोर देना
- अध्यापकों को प्रशिक्षण तकनीकी उपकरणों के माध्यम से देने की समझ होना
- सभी को एक समान दृष्टि से देखने की समझ का ज्ञान होना
- अध्यापकों में अपनी भूमिका को समझने का ज्ञान होना
- अध्यापक एक गाइड की तरह सभी को बेहतर ढंग से जानकारी देने की समझ होना
- अध्यापकों को नई शिक्षा नीति की जानकारी रखना
- कौशल का कुशलता पूर्वक विकास की जानकारी देना
- ग्रामीण क्षेत्रों के शिक्षण संस्थानों को आई0सी0टी0 के उपयोग की जानकारी की समझ होना
- अध्यापक को ऐसा बनाया जाय जो सभी समुदायों को समान लाभ पहुंचाने का ज्ञान होना
- अध्यापकों को रेगुलर होने की समझ होना

- ट्रेनिंग कालेजों में आई0सी0टी0 के उपयोग का ज्ञान होना
- सृजनात्मकता लाने की समझ होना
- शैक्षिक प्रबन्धन की समझ होना
- भ्रष्टाचार को हटाने की समझ होना
- राष्ट्रीय एवं राज्य स्तर पर नॉर्म बनाये, जिससे योग्यता की पहचान की समझ होना
- अध्यापक आवश्यकता मेरिट आधार बनाये जाने की समझ रखना
- अभिप्रेरित करने का ज्ञान होना
- अध्यापकों को ट्रेनिंग की व्यवस्था करने की समझ होना
- एन0सी0टी0ई0 के नॉर्म में दो वर्षीय बी0एड0 एवं एम0एड0 कार्यक्रमों से छात्राध्यापकों के भविष्य को गुणक्तायुक्त बनाये जाने की समझ होना
- डाइट प्रोग्राम में टीचर ट्रेनर को अपने विषय की समझ होना

अध्यापक शिक्षण कार्यों, प्रबन्धनों, संस्थानों एवं अध्यापकों के वृत्तिक विकास के उन्नयन हेतु सेवाकालीन प्रशिक्षण विभिन्न स्तरों पर कार्यरत अध्यापकों के लिए अनिवार्य एवं उनके व्यवसायिक उन्नति में सहायता देने हेतु व छात्रों की विभिन्न समस्याओं व शिक्षण को रोचक बनाने हेतु आवश्यक प्रतीत होता है। इसमें समय–समय पर बदलाव लेकर इसके प्रति सभी सेवारत अध्यापकों को प्रशिक्षण की व्यवस्था किया जाय।

जिससे वे अपने व्यक्तिगत जीवन, व्यावसायिक उन्नति, छात्राध्यापकों को समझना, सामान्य शिक्षण व शिक्षणशास्त्र, पाठ्यक्रम, छात्राध्यापकों के विकास में दक्षता, सैद्धान्तिक पाठ्यक्रमों का ज्ञान, विद्यालयी पाठ्यचर्या सम्बन्धित विषय में दक्षता, क्षेत्र/प्रायोगिक क्रियाकलाप में दक्षता, कार्यक्रम कार्यान्वयन हेतु दक्षता, नवाचारी शिक्षणशास्त्र में प्रशिक्षण की आवश्यकता, प्रशिक्षण तकनीक कौशल का ज्ञान, इन्टर्नशीप शिक्षण कार्य का ज्ञान, शैक्षिक तकनीकी का ज्ञान, आंकलन एवं मूल्यांकन का ज्ञान, अनुसंधान का ज्ञान क्रियात्मक अनुसंधान का ज्ञान, संस्थान की गुणवक्ता का ज्ञान, भविष्यपरक नियोजन का कौशल इत्यादि आवश्यकताओं में दक्ष बनाया जाय। जिससे सेवाकालीन शिक्षा प्रासांगिक हो सके तथा अध्यापक शिक्षकों में रोचकता व व्यवसाय के प्रति जिज्ञासा लाया जा सके ऐसे बिन्दुओं का प्रशिक्षण विभिन्न माध्यमों द्वारा दिया जा सकता है।

अध्यापक शिक्षकों की वृत्तिक विकास हेतु शिक्षाशास्त्रीय विषय ज्ञान तथा कौशल शिक्षा की आवश्यकता का अध्ययन

अध्ययन के उद्देश्य–

1. सेवाकालीन अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों में प्रतिभागी अध्यापकों का सेवाकालीन कार्यक्रमों के प्रति–प्रतिक्रिया का अध्ययन करना।
2. अध्यापक शिक्षकों के संदर्भ में शिक्षाशास्त्रीय विषय ज्ञान तथा कौशल शिक्षा की आवश्यकता का अध्ययन करना।

इस अध्ययन के लिए निम्न तीन परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है।

1. अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों में प्रतिभागी स्ववित्तपोषित तथा वित्तपोषित अध्यापक शिक्षकों का सेवाकालीन कार्यक्रमों के प्रति–प्रतिक्रिया परस्पर स्वतंत्र है।
2. स्ववित्तपोषित तथा वित्तपोषित अध्यापक शिक्षकों के वृत्तिक विकास हेतु विषय परस्पर स्वतंत्रत है।
3. अध्यापक शिक्षकों की वृत्तिक विकास हेतु शिक्षाशास्त्रीय विषय ज्ञान तथा कौशल शिक्षा परस्पर स्वतंत्र है।

अध्ययन विधि–प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया है।

जनसंख्या–प्रस्तुत अध्ययन में उत्तर भारत के हिन्दी भाषा–भाषी क्षेत्रों के सेवाकालीन बी0एड0 एवं एम0एड0 अध्यापक–शिक्षकों को जनसंख्या के रुप में लिया गया है।

न्यादर्श–सेवाकालीन प्रशिक्षण हेतु 50 वित्तपोषित बी0एड0 एवं एम0एड0 अध्यापक शिक्षक तथा 50 स्ववित्तपोषित बी0एड0 एवं एम0एड0 अध्यापक शिक्षक उत्तर भारत के हिन्दी भाषा–भाषी क्षेत्रों से चयन किया गया है।

उपकरण–अध्ययन के उद्देश्यों की अभिपूर्ति के लिए स्वनिर्मित उपकरण का प्रयोग किया गया जिसके लिए 'सेवाकालीन प्रशिक्षण हेतु आवश्यकता' प्रश्नावली का निर्माण किया गया विभिन्न विषय विशेषज्ञों तथा शिक्षकों से प्राप्त सुझावानुसार इस प्रश्नावली में कुल 7 घटकों पर अध्ययन किये गये, जो निम्नवत् है–

स्वयं का व्यक्तित्व, छात्राध्यापकों को समझना, सामान्य शिक्षण व शिक्षणशास्त्र, पाठ्यक्रम, शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में दक्षता, क्षेत्र/प्रायोगिक क्रियाकलाप में दक्षता, शैक्षिक तकनीकी का ज्ञान तथा उसमें निर्मित कथनों का विवरण निम्नवत् है–

क्रमांक	सेवाकालीन प्रशिक्षण हेतु आवश्यक बिन्दु क्षेत्र	कथन संख्या
1.	स्वयं का व्यक्तित्व	06
2.	छात्राध्यापकों को समझना	05
3.	सामान्य शिक्षण एवं शिक्षण शास्त्र	05
4.	पाठ्यक्रम	05
5.	शिक्षा के क्षेत्र में दक्षता	06
6.	क्षेत्र/प्रायोगिक क्रियाकलाप में दक्षता	04
7.	शैक्षिक तकनीक का ज्ञान	05

प्रयुक्त सांख्यिकी–आकड़ों के विश्लेषण के लिए काई स्क्वायर (X^2) का प्रयोग सार्थकता स्तर को ज्ञात करने के लिए किया गया। इसके अतिरिक्त प्रतिशत विश्लेषण का प्रयोग किया गया।

आकड़ों की व्याख्या–उद्देश्य–1 सेवाकालीन अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों में प्रतिभागी अध्यापकों का सेवाकालीन कार्यक्रमों के प्रति प्रतिक्रिया का अध्ययन।

तालिका–1

स्वयं के व्यक्तित्व के विकास हेतु वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित अध्यापक शिक्षकों की प्रशिक्षण की आवश्यकता परस्पर स्वतंत्रता का x^2 परिक्षण

	आवश्यक	सामान्य आवश्यक	अनावश्यक	योग	2x3 सारणी से x^2 का मूल्य
वित्तपोषित अध्यापक शिक्षक	36 (73%)	12 (24%)	02 (4%)	50	**2.19 N.S.**
स्ववित्तपोषित अध्यापक शिक्षक	38 (76%	11 (22%)	01 (2%)	50	
योग	**74**	**23**	**03**	**100**	

अतः .05 पर असार्थक है–

तालिका–1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि अवलोकित x^2 का मूल्य 2.19 है, जो कि (मुक्तांश=2) पर .05 स्तर के सारणी मान से कम है, अतः इस क्षेत्र के लिए x^2 का मान सार्थक नहीं है, इस क्षेत्र के लिए बनी शून्य परिकल्पना की स्वयं के व्यक्तित्व के विकास हेतु स्ववित्तपोषित तथा वित्तपोषित अध्यापक शिक्षकों की प्रशिक्षण की आवश्यकता सम्बन्धित नहीं है। स्वीकार किया जाता है, अतः हम कह सकते है, कि स्वयं के व्यक्तित्व विकास हेतु आवश्यक प्रशिक्षण की आवश्यकता वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित अध्यापक शिक्षकों को समान रुप से आवश्यकता है।

तालिका–1 से स्पष्ट है कि स्वयं के व्यक्तित्व के विकास से सम्बन्धित विकास करने के लिए सर्वाधिक 72 प्रतिशत वित्तपोषित अध्यापक शिक्षक और 76 प्रतिशत स्ववित्तपोषित अध्यापक शिक्षक–प्रशिक्षण को आवश्यक मानते है।

तालिका–2

छात्राध्यापकों को समझने हेतु स्ववित्तपोषित तथा वित्तपोषित अध्यापक शिक्षकों की प्रशिक्षण आवश्यकता परस्पर स्वतंत्रता का x^2 परीक्षण।

	आवश्यक	सामान्य आवश्यक	अनावश्यक	योग	2x3 सारणी से x^2 का मूल्य
वित्तपोषित अध्यापक शिक्षक	40 (80%)	9 (18%)	01 (2%)	50	**0.38 N.S.**
स्ववित्तपोषित अध्यापक शिक्षक	39 (78%)	11 (23%)	0 (0%)	50	
योग	**79**	**20**	**01**	**100**	

df = .05 पर असार्थक है।

तालिका–2 के अवलोकन से स्पष्ट है कि अवलोकित x^2 का मूल्य 0.38 है, जो कि (मुक्तांश=2) पर .05 स्तर के सारणी मान से कम है, अतः इस क्षेत्र के लिए x^2 का मान सार्थक नहीं है, इस क्षेत्र के लिए बनी शून्य परिकल्पना की छात्राध्यापकों को समझने हेतु स्ववित्तपोषित तथा वित्तपोषित अध्यापक शिक्षकों की प्रशिक्षण की आवश्यकता सम्बन्धित नहीं है, को स्वीकार किया जाता है।

अतः हम कह सकते है, कि छात्राध्यापकों को समझने हेतु आवश्यक प्रशिक्षण की आवश्यकता वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित बी0एड0 एवं एम0एड0 अध्यापक शिक्षकों को समान रुप से आवश्यकता है।

तालिका–2 से स्पष्ट है कि छात्राध्यापकों को समझने से सम्बन्धित विकास हेतु सर्वाधिक 80 प्रतिशत वित्तपोषित अध्यापक शिक्षक और 78 प्रतिशत स्ववित्तपोषित अध्यापक शिक्षक प्रशिक्षण को आवश्यक मानते है।

तालिका–3

सामान्य शिक्षण एवं शिक्षणशास्त्र हेतु स्ववित्तपोषित तथा वित्तपोषित अध्यापक शिक्षकों की प्रशिक्षण आवश्यकता परस्पर स्वतंत्रता का x^2 परीक्षण।

	आवश्यक	सामान्य आवश्यक	अनावश्यक	योग	2x3 सारणी से x^2 का मूल्य
वित्तपोषित अध्यापक शिक्षक	37 (74%)	12 (24%)	01 (2%)	50	1.22 N.S.
स्ववित्तपोषित अध्यापक शिक्षक	40 (80%)	9 (18%)	1 (2%)	50	
योग	**77**	**21**	**2**	**100**	

.05 पर असार्थक है।

तालिका–3 के अवलोकन से स्पष्ट है कि अवलोकित x^2 का मूल्य 1.22 है, जो कि (मुक्तांश=2) पर .05 स्तर के सारणी मान से कम है, अतः इस क्षेत्र के लिए x^2 का मान सार्थक नहीं है, इस क्षेत्र के लिए बनी शून्य परिकल्पना की सामान्य शिक्षण एवं शिक्षणशास्त्र में दक्षता हेतु स्ववित्तपोषित तथा वित्तपोषित अध्यापक शिक्षकों की प्रशिक्षण की आवश्यकता सम्बन्धित नहीं है, को स्वीकार किया जाता है।

अतः हम कह सकते है, कि सामान्य शिक्षण एवं शिक्षणशास्त्र में दक्षता हेतु आवश्यक प्रशिक्षण की आवश्यकता वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित बी0एड0 एवं एम0एड0 अध्यापक शिक्षकों को समान रुप से आवश्यक है।

तालिका–3 से स्पष्ट है कि सामान्य शिक्षण एवं शिक्षण शास्त्र से सम्बन्धित दक्षता के विकास हेतु सर्वाधिक 74 प्रतिशत वित्तपोषित अध्यापक शिक्षक और 80 प्रतिशत स्ववित्तपोषित अध्यापक शिक्षक सेवाकालीन प्रशिक्षण को आवश्यक मानते है।

उद्देश्य–2 अध्यापक शिक्षकों के संदर्भ में शिक्षाशास्त्रीय विषय ज्ञान तथा कौशल शिक्षा की आवश्यकता का अध्ययन करना।

तालिका–4

पाठ्यक्रम में दक्षता हेतु वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित अध्यापक शिक्षकों की प्रशिक्षण आवश्यकता परस्पर स्वतंत्रता का x^2 परीक्षण

	आवश्यक	सामान्य आवश्यक	अनावश्यक	योग	2x3 सारणी से x^2 का मूल्य
वित्तपोषित अध्यापक शिक्षक	40 (80%)	10 (20%)	0 (0%)	50	0.11 N.S.
स्ववित्तपोषित अध्यापक शिक्षक	39 (78%)	11 (22%)	0 (0%)	50	
योग	**79**	**21**	**0**	**100**	

.05 पर असार्थक है।

तालिका–4 के अवलोकन से स्पष्ट है कि अवलोकित x^2 का मूल्य 0.11 है, जो कि (मुक्तांश=2) पर .05 स्तर के सारणी मान से कम है, अतः इस क्षेत्र के लिए x^2 का मान सार्थक नहीं है, इस क्षेत्र के लिए बनी शून्य परिकल्पना की पाठ्यक्रम हेतु वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित अध्यापक शिक्षकों की आवश्यकता सम्बन्धित नहीं है, को स्वीकार किया जाता है।

अतः हम कह सकते है, कि पाठ्यक्रम में प्रशिक्षण की आवश्यकता वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित बी0एड0 एवं एम0एड0 अध्यापक शिक्षकों को समान रुप से आवश्यक है।

तालिका–4 से स्पष्ट है कि पाठ्यक्रम दक्षता से सम्बन्धित विकास हेतु सर्वाधिक 80 प्रतिशत वित्तपोषित अध्यापक शिक्षक और 78 प्रतिशत स्ववित्तपोषित अध्यापक शिक्षक सेवाकालीन प्रशिक्षण को आवश्यक मानते है।

तालिका–5

शिक्षा के परिपेक्ष्य में दक्षता हेतु वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित अध्यापक शिक्षकों की प्रशिक्षण आवश्यकता परस्पर स्वतंत्रता का x^2 परीक्षण

	आवश्यक	सामान्य आवश्यक	अनावश्यक	योग	2x3 सारणी से x^2 का मूल्य
वित्तपोषित अध्यापक शिक्षक	38 (76%)	11 (22%)	1 (2%)	50	0.54 N.S.
स्ववित्तपोषित अध्यापक शिक्षक	40 (80%)	9 (18%)	1 (2%)	50	
योग	**78**	**20**	**2**	**100**	

.05 पर असार्थक है।

तालिका–5 के अवलोकन से स्पष्ट है कि अवलोकित x^2 का मूल्य 0.54 है, जो कि (मुक्तांश=2) पर .05 स्तर के सारणी मान से कम है, अतः इस क्षेत्र के लिए x^2 का मान सार्थक नहीं है, इस क्षेत्र के लिए बनी शून्य परिकल्पना की शिक्षा के परिपेक्ष्य में प्रशिक्षण हेतु वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित अध्यापक शिक्षकों की आवश्यकता सम्बन्धित नहीं है, को स्वीकार किया जाता है।

अतः हम कह सकते है, कि पाठ्यक्रम से सम्बन्धित वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित बी0एड0 एवं एम0एड0 अध्यापक शिक्षकों को सेवाकालीन प्रशिक्षण की समान आवश्यकता है।

तालिका–5 से स्पष्ट है कि शिक्षा के परिपेक्ष्य में दक्षता हेतु सर्वाधिक विकास के लिए 76 प्रतिशत वित्तपोषित अध्यापक शिक्षक और 80 प्रतिशत स्ववित्तपोषित अध्यापक शिक्षक सेवाकालीन प्रशिक्षण को आवश्यक मानते है।

तालिका–6

क्षेत्र/प्रायोगिक क्रियाकलाप में दक्षता हेतु वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित अध्यापक शिक्षकों की प्रशिक्षण आवश्यकता परस्पर स्वतंत्रता का x^2 परीक्षण

	आवश्यक	**सामान्य आवश्यक**	**अनावश्यक**	**योग**	**2x3 सारणी से x^2 का मूल्य**
वित्तपोषित अध्यापक शिक्षक	41 (82%)	08 (16%)	1 (2%)	50	0.91 N.S.
स्ववित्तपोषित अध्यापक शिक्षक	39 (78%)	11 (22%)	0 (0%)	50	
योग	**80**	**19**	**1**	**100**	

.05 पर असार्थक है।

तालिका–6 के अवलोकन से स्पष्ट है कि अवलोकित x^2 का मूल्य 0.91 है, जो कि df (मुक्तांश–02) पर .05 स्तर के सारणी मान से कम है, अतः इस क्षेत्र के लिए x^2 का मान सार्थक नहीं है, इस क्षेत्र के लिए बनी शून्य परिकल्पना की क्षेत्र/प्रायोगिक क्रियाकलाप में दक्षता हेतु वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित अध्यापक शिक्षकों की आवश्यकता सम्बन्धित नहीं है, को स्वीकार किया जाता है।

अतः हम कह सकते है, कि क्षेत्र/प्रायोगिक क्रियाकलाप से सम्बन्धित वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित बी0एड0 एवं एम0एड0 अध्यापक शिक्षकों को सेवाकालीन प्रशिक्षण की समान आवश्यकता है।

तालिका–6 से स्पष्ट है कि क्षेत्र/प्रायोगिक क्रियाकलाप में दक्षता बनाने हेतु सर्वाधिक 82 प्रतिशत वित्तपोषित अध्यापक शिक्षक और 78 प्रतिशत स्ववित्तपोषित अध्यापक शिक्षक सेवाकालीन प्रशिक्षण को आवश्यक मानते है।

तालिका–7

शैक्षिक तकनीक के ज्ञान में वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित अध्यापक शिक्षकों की प्रशिक्षण आवश्यकता परस्पर स्वतंत्रता का x^2 परीक्षण

	आवश्यक	**सामान्य आवश्यक**	**अनावश्यक**	**योग**	**2x3 सारणी से x^2 का मूल्य**
वित्तपोषित अध्यापक शिक्षक	45 (90%)	05 (10%)	0 (0%)	50	1.33 N.S.
स्ववित्तपोषित अध्यापक शिक्षक	42 (84%)	08 (16%)	0 (0%)	50	
योग	**87**	**13**	**0**	**100**	

.05 पर असार्थक है।

तालिका–7 के अवलोकन से स्पष्ट है कि अवलोकित x^2 का मूल्य 1.33 है, जो कि df (मुक्तांश=2) पर .05 स्तर के सारणी मान से कम है, अतः इस क्षेत्र के लिए x^2 का मान सार्थक नहीं है, इस क्षेत्र के लिए बनी शून्य परिकल्पना की शैक्षिक तकनीकी के ज्ञान हेतु वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित अध्यापक शिक्षकों की प्रशिक्षण की आवश्यकता सम्बन्धित नहीं है, को स्वीकार किया जाता है।

अतः हम कह सकते है, कि शैक्षिक तकनीकी के ज्ञान हेतु सम्बन्धित बी0एड0 एवं एम0एड0 वित्तपोषित व स्ववित्तपोषित अध्यापक शिक्षकों को प्रशिक्षण की समान आवश्यकता है।

तालिका–7 से स्पष्ट है कि शैक्षिक तकनीकी के ज्ञान से सम्बन्धित दक्ष बनने हेतु सर्वाधिक 90 प्रतिशत वित्तपोषित अध्यापक शिक्षक और 84 प्रतिशत स्ववित्तपोषित अध्यापक शिक्षक सेवाकालीन प्रशिक्षण को आवश्यक मानते है।

अध्ययन के मुख्य निष्कर्ष–अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष निम्नलिखित है .05 सार्थकता स्तर पर पाया गया कि सेवाकालीन प्रशिक्षण के क्षेत्र में और अधिक दक्षता के लिए वित्तपोषित अध्यापक शिक्षकों और स्ववित्तपोषित अध्यापक शिक्षकों को और अधिक सेवाकालीन शिक्षा की आवश्यकता है।

- स्वयं के व्यक्तित्व विकास में
- छात्राध्यापकों को समझने में
- सामान्य शिक्षण एवं शिक्षणशास्त्र के समझ में
- पाठ्यक्रम विकास में
- शिक्षा के परिपेक्ष्य के दक्षता विकास में
- क्षेत्र/प्रायोगिक क्रियाकलाप के दक्षता विकास में
- शैक्षिक तकनीकी कौशल में
- नवाचारिक शिक्षणशास्त्र के विकास में
- अन्य में
- प्रतिशत विश्लेषण से स्पष्ट है कि स्वयं के व्यक्तित्व विकास में वित्तपोषित अध्यापक शिक्षक व स्ववित्तपोषित अध्यापक शिक्षकों का आकड़ा 72 प्रतिशत और 76 प्रतिशत लोग सेवाकालीन प्रशिक्षण आवश्यक हेतु मत व्यक्त किया है।
- 80 प्रतिशत और 78 प्रतिशत आवश्यक शिक्षकों ने छात्राध्यापकों को समझने के लिए सेवाकालीन प्रशिक्षण को आवश्यक माना है।
- सामान्य शिक्षण एवं शिक्षणशास्त्र के लिए 74 प्रतिशत और 80 प्रतिशत अध्यापक शिक्षकों ने सेवाकालीन शिक्षा को आवश्यक माना है।
- 80 प्रतिशत वित्तपोषित अध्यापक शिक्षक व 78 प्रतिशत स्ववित्तपोषित अध्यापक शिक्षक पाठ्यक्रम में दक्षता बढ़ाने हेतु सेवाकालीन प्रशिक्षण के लिए अपना मत व्यक्त किया और प्रशिक्षण दिये जाने की आवश्यकता है।
- 76 प्रतिशत वित्तपोषित अध्यापक शिक्षक शिक्षा के परिपेक्ष्य में दक्षता बढ़ाने की अनुशंसा या सुझाव दिया तथा 80 प्रतिशत स्ववित्तपोषित अध्यापक शिक्षक ने भी इसके लिए सेवाकालीन प्रशिक्षण को आवश्यक माना।

- 82 प्रतिशत वित्तपोषित बी0एड0 और एम0एड0 अध्यापक शिक्षकों ने तथा 78 प्रतिशत स्ववित्तपोषित बी0एड0 एवं एम0एड0 अध्यापक शिक्षकों ने क्षेत्र/प्रायोगिक क्रियाकलाप के विकास हेतु सेवाकालीन प्रशिक्षण आवश्यक माना।
- 90 प्रतिशत वित्तपोषित बी0एड0 और एम0एड0 अध्यापक शिक्षकों ने तथा 84 प्रतिशत स्ववित्तपोषित बी0एड0 एवं एम0एड0 अध्यापक शिक्षकों ने शैक्षिक तकनीकी के ज्ञान के विकास हेतु सेवाकालीन प्रशिक्षण आवश्यक माना।

उपर्युक्त परिणामों को देखते हुए कहा जा सकता है कि वित्तपोषित व स्ववित्तपोषित अध्यापक शिक्षकों को विभिन्न बिन्दुओं जैसे स्वयं के विकास छात्राध्यापकों को समझना, पाठ्यक्रम विकास शिक्षा के परिपेक्ष्य में दक्षता, विद्यालयी विषय में दक्षता सूचना एवं सम्प्रेषण में दक्षता, नवाचारी शिक्षणशास्त्र में दक्षता आदि में सेवाकालीन प्रशिक्षण दिये जाने की और आवश्यकता है।

शैक्षिक निहितार्थ–

आज इस बात की महत्वपूर्ण आवश्यकता है कि अध्यापक शिक्षकों की वृत्तिक विकास हेतु शिक्षाशास्त्रीय विषय ज्ञान तथा कौशल शिक्षा की आवश्यकता की स्थिति का आकलन किया जाय। अतः अध्यापक शिक्षकों के लिए स्वयं के व्यक्तित्व का विकास, छात्राध्यापकों को समझना सामान्य शिक्षण एवं शिक्षणशास्त्र का ज्ञान, पाठ्यक्रम, छात्राध्यापकों के विकास में दक्षता, सैद्धान्तिक पाठ्यक्रमों का ज्ञान, शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में दक्षता, विद्यालयी पाठ्यचर्या सम्बन्धित विषय में दक्षता, क्षेत्र/प्रायोगिक क्रियाकलाप में दक्षता, कार्यक्रम कार्यान्वयन हेतु दक्षता, नवाचारी शिक्षणशास्त्र में प्रशिक्षण की आवश्यकता, प्रशिक्षण तकनीक कौशल का ज्ञान, इन्टर्नशिप शिक्षण कार्य का ज्ञान, शैक्षिक तकनीक (OER, I.C.T., MOOCs) का ज्ञान, आकलन एवं मूल्यांकन का ज्ञान, अनुसंधान का ज्ञान, क्रियात्मक अनुसंधान का ज्ञान, संस्थान की गुणवत्ता का ज्ञान, भविष्यपरक नियोजन कौशल का ज्ञान से सम्बन्धित विभिन्न सेवाकालीन कौशलों की आवश्यकता अध्यापक शिक्षकों को महसूस हो सकती है।

संदर्भ–सूची

1. एन0सी0ई0आर0टी0 (1970): एजूकेशन एण्ड नेशनल डेवेलपमेंट रिपोर्ट ऑफ द एजूकेशन कमीशन 1964–66 वैल्यूम 03 हायर एजूकेशनः नई दिल्ली।
2. कुमार जे0 और लाल, आर0 (1980): यूज ऑफ माइक्रोटीचिंग इन इम्प्रूविंग जनरल टीचिंग कॉम्पिटेन्सी ऑफ इन सर्विस टीचर्स, हरियाणा, एन0सी0ई0आर0टी0।
3. यूनेस्को (1985): एकेडमिक स्टाफ कालेज डेवलपमेंट इन हायर एजूकेशन रिपोर्ट ऑफ ए रीजनल वर्कशाप ऐट यूनिविर्सिटी ऑफ न्यू इंग्लैण्ड, आरमिडल, बैकाकः यूनेस्को।
4. कुण्डु सी0एल0 (1988): इण्डियन ईयर बुक ऑन टीचर एजूकेशनः स्टारलाइन पब्लिशर्स प्रा0लि0ः नई दिल्ली।
5. MHRD (1992): नेशनल पॉलिसी ऑन एजूकेशन 1986 (विथमोडिफिकेशन अण्डरटेकेन इन 1992), न्यू दिल्ली मिनिस्ट्री ऑफ ह्यूमन रिर्सोस डेवलपमेंट।

6. हड्डी एम0 (1993): इफेक्टिवनेस ऑफ इन सर्विस ट्रेनिंग प्रोग्राम्स प्रोवाइडेड फार स्पेशल एजूकेशन टीचर इन जार्डन डिशस्ट वैल्यूम।
7. एन0सी0टी0ई0 (2001): अध्यापक शिक्षा में नीतिगत परिदृष्टः नवीन शाहदरा द्वारा मुद्रितः नई दिल्ली।
8. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या ढाँचा (एन0सी0एफ0) (2005): भारत सरकार, नई दिल्ली।
9. सक्सेना एन0आर0, मिश्रा बी0के0, मोहन्ती आर0के0 (2008): अध्यापक शिक्षा–प्रकाशक, विनय रखेजा C/o आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ।
10. सिंह रीना (2010): उच्च स्तर पर कार्यरत अध्यापक प्रशिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययनः अप्रकाशित शोध ग्रन्थ शिक्षाशास्त्र विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।
11. शरतेन्दु दुबे, सत्य नारायण (नवीन संस्करण 2014): अध्यापक शिक्षा–शारदा पुस्तक भवन, पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, इलाहाबाद।
12. M.H.R.D. भारत का राजपत्र (राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद अधिसूचना 28 नवम्बर 2014): नई दिल्ली।
13. नेशनल पॉलसी आन एजूकेशन (2016): रिपोर्ट ऑफ द कमेटी फार इवैल्यूएशन ऑफ द न्यू एजूकेशन पॉलसी (30.04.2016) भारत सरकार, नई दिल्ली।
14. भट्टाचार्य जी0सी0 (2016–17): अध्यापक शिक्षाः अग्रवाल पब्लिशर्स, आगरा।